IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11, Iss 12, 2022

बाराबंकी जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की सृजनात्मकता का अध्ययन

डॉ. बी.के. गुप्ता

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष

शिक्षाशास्त्र विभाग

आशीष कुमार द्विवेदी

शोधार्थी

जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पोस्ट–ग्रेजुएट कॉलेज, बाराबंकी

सारांश–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में बाराबंकी जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की सृजनात्मकता का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श हेतु प्रस्तुत शोध कार्य में बाराबंकी जिले के उच्च माध्यमिक के कुल 400 छात्रों का न्यादर्श के रूप में स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श पद्धति द्वारा चयन किया है। अध्ययन के परिणाम में यह पाया कि उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर है।

मुख्य शब्दावली– सृजनात्मक विकास, शैक्षणिक सामग्री।

प्रस्तावना

सृजनात्मकता जन्मजात न होकर अर्जित की जाती है। सृजनात्मकता प्राचीन अनुभवों पर आधारित नवीन सम्बन्धों की रूपरेखा तथा नूतन साहचर्यो का सम्बोध कही जा सकती है। सृजनात्मकता का अर्थ एक ऐसी योग्यता से लगाया जात है जो किसी समस्या के विद्वतापूर्ण समाधान के लिए नवीन विधियों तथा स्थितियों का सहारा लेती है। सृजनात्मक व्यक्तियों में समस्याओं के प्रति सजगता, विचार में गति, नम्यता, मौलिकता, नवीनता के लिए परिवर्तन तथा जिज्ञासा का समिश्रण होता है। इसमें

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 11, Iss 12, 2022

आत्म–निर्देशित दिशा, आत्मप्रेरणा, आत्माभिव्यक्ति तथा आगे बढ़कर अर्थ करने की विशेषताएँ भी सम्मिलित रहती है।

स्टीन के अनुसार– ''सृजनात्मकता एक नवीन कार्य है जो किसी समय बिन्दु पर एक समूह द्वारा तकसंगत उपयोगी या सन्तोषजनक रूप से स्वीकृत हो।''

कोल और ब्रूस के अनुसार– '' सृजनात्मकता मौलिक उत्पाद के रूप में मानव मस्तिष्क को समझने व्यक्त करने तथा सराहना करने की योग्यता व क्रिया है''।

सामान्य शब्दों में कहा जाये तो कुछ सार्थक नवीन ओर अनोखी सोच व अनोखा करने की क्षमता ही सृजनात्मकता कहलाती है, किन्तु यह तभी सार्थक सिद्ध होगी जब इस अनोखी सोच में उपयोगिता का गुण विद्यमान होगा। सृजनात्मक पर अनेक विद्वानों ने अपने–अपने मत को शामिल किया है जो परस्पर एक दूसरे से भिन्न हैं।

अध्ययन का औचित्य

बालको में सृजनात्मक का विकास करना व्यक्ति तथा समाज दोनों के हित में है। जैसे–जैसे बालक में प्रतिबोध एवं संबोध का विकास होता जाता है वह अपने वातावरण में परिवर्तन करना चाहता है जबकि प्रौढ व्यक्ति परिस्थितीनुगत यथार्थ होता है। बालक कल्पनाशील होते है। इसलिये उनमें सृजनात्मकता का विकास होना चाहिये ताकी हम उनके सृजनात्मकता के स्तर को देखकर उन्हे अधिगमन पाने के लिये प्रेरित कर सके। उनके बुद्धिवादी क्षमता का उपयोग कर सके। समस्या को हल करने में तथ्यों को समझने तथा मूल्यांकन करने की प्रवृत्ती का विकास कर सके। सृजनात्मकता बालकों में निहीत विशिष्ट गुण है। इस गुण का विकास किया जाना आवश्यक है। शिक्षक तथा अभिभावको को इस बात से परिचित होना चाहिये की सृजनशील बालक स्वतंत्र निर्णय शक्तिवाले होते है। अपनी बात पर दृढ होते है। वे जटिल समस्याओं के समाधान में

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11, Iss 12, 2022

रूची लेते है। वे उच्चस्तर की प्रतिक्रिया करते है। इसलिये छात्रों के सृजनात्मकता के विकास की ओर ध्यान देना चाहिये।

अध्ययन के उद्देश्य

1 उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की सृजनात्मकता का अध्ययन का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1 उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध की विधि –

प्रस्तुत शोध के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

जनसंख्या –

प्रस्तुत अध्ययन में बाराबंकी जिले के उच्चतर माध्यमिक में अध्ययन करने वाले छात्रों को जनसपचया हेतु चयनित किया है।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध कार्य में बाराबंकी जिले के उच्चतर माध्यमिक में अध्ययन करने वाले कुल 400 छात्रों का न्यादर्श के रूप में स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श पद्धति द्वारा चयन किया है।

प्रदत्त संकलन हेतु प्रयुक्त उपकरण–

प्रस्तुत अनुसंधान में साधनों की सहायता से जानकारी संकलित की गई है वे उपकरण निम्नलिखित है–

- सृजनात्मकता परीक्षण – बी.के. पासी द्वारा निर्मित

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11, Iss 12, 2022

सांख्यिकीय प्रविधियाँ –

प्रस्तुत अध्ययन में सांख्यिकीय प्रविधि के रूप में मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

व्याख्या एवं विश्लेषण

परिकल्पना 1 – उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका – 1

उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की सृजनात्मकता में अंतर

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिकल्पना की सार्थकता
शहरी छात्र	200	23.31	4.28	2.99	
ग्रामीण छात्र	200	21.66	6.52		अस्वीकृत

व्याख्या–

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रों की सृजनात्मकता का मध्यमान 23.31 एवं मानक विचलन 4.28 है। दूसरी ओर उच्च माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण छात्रों की सृजनात्मकता का का मध्यमान 21.66 एवं मानक विचलन 6.52 है। मध्यमान एवं मानक विचलन से टी परीक्षण का मूल्य 2.99 प्राप्त हुआ जो सार्थकता स्तर 0.05 पर तालिका मूल्य 1.97 से अधिक है। अतः इस आधार पर

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11, Iss 12, 2022

परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अर्थात् यह कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर है।

आरेख – 1

उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की सृजनात्मकता के मध्यमान एवं मानक विचलन

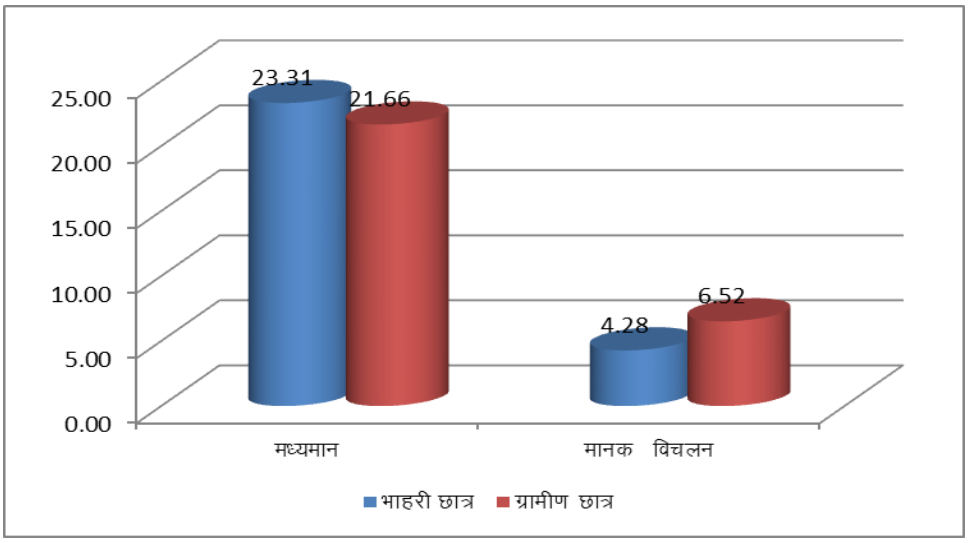

सुझाव

- सृजनात्मक के विकास के लिये बाल्यावस्था सबसे उपयुक्त समय है। अतः ऐसे समय में छात्रों को अनेक प्रकार के शैक्षिक व गैर शैक्षिक सृजनात्मक कार्यों में संलग्न रखना चाहिए।
- शिक्षक कक्षा में नवीन व उपयुक्त शिक्षण विधियों को अपनाकर सृजनात्मकता का विकास कर सकता है।
- विद्यालय का वातावरण को विद्यालय संगठन ऐसा बनाये कि छात्र सृजनात्मक चिंतन के लिये बाध्य हों।
- समय–समय पर उनके कार्यों व उपलब्धियों का मूल्यांकन करते रहना चाहिए।
- शिक्षक को व्यक्तिगत भिन्नताओं के आधार पर शिक्षित करना चाहिए।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11, Iss 12, 2022

- जिन बालकों में सृजनात्मक गुण दिखें उन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता समझें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- आर्य, मनीषा और मौर्य, सुमन प्रसाद (2017). स्कूली बच्चों की सृजनात्मकता और शैक्षणिक उपलब्धि पर अध्ययन। *International Journal of Family and Home Science*, 13(3), 379-387.
- चौहान, सारिका और शर्मा, अनीता (2017). सार्वजनिक और निजी स्कूल के विद्यालयों के छात्रों की सृजनात्मकता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंधों के अध्ययन। *International journal of science technology and management*, 6(1), 39-45.
- गैरेट एच.ई. (1981). *मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी.* दशम् संस्करण, बॉम्बेः बी. एफ. एण्ड सन्स।
- गुप्ता एस.पी. और गुप्ता उमा (1999). *सांख्यिकी के सिद्धान्त.* नई दिल्लीः सुलतान चन्द एण्ड सन्स दरियागंज।
- कुमावत, सुनीता (2022). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन। *International Journal of Creative Research Thoughts*, 10(5), 360-362.
- कुमार, वी. (2004). उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में विज्ञान में अभिरूचि एवं वैज्ञानिक सृजनात्मकता के मध्य सह सम्बन्ध का अध्ययन। शोध प्रबन्ध, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
- माथुर एस.एस. (2007). *शिक्षा मनोविज्ञान.* आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
- सरीन (2007), *शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ,* आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
- शर्मा, नवीन (2020). शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा तथा सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन। *International Journal of Creative Research and Innovation*, 5(11), 1-8.

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**, Journal Volume 11, Iss 12, 2022

- शर्मा, विष्णु (2020). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का उनके अधिगम, चिन्तन शैली एवं सृजनात्मकता के संदर्भ में अध्ययन। *Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences*, 3(1), 168-171.